Best Compliment from

STELLA MARIS SCHOOL

BAMANWADA, RAJURA

Dist. Chandrapur - 442 905 (M.S.)

Affiliation No. : 1130246

Mob. : 9922453396

जीवधारा

Vol.1 : 2022

बालकसंघ, चांदा धर्मप्रान्त

हे बालकयेशु हमारे लिए प्रार्थना कर

Edited by
Holy Childhood Association
Diocese of Chanda
Bishop's Home,
Ballarpur - 442 701

Printed by
Kiranoday Enterprises
Main Road,
Ballarpur - 442 701

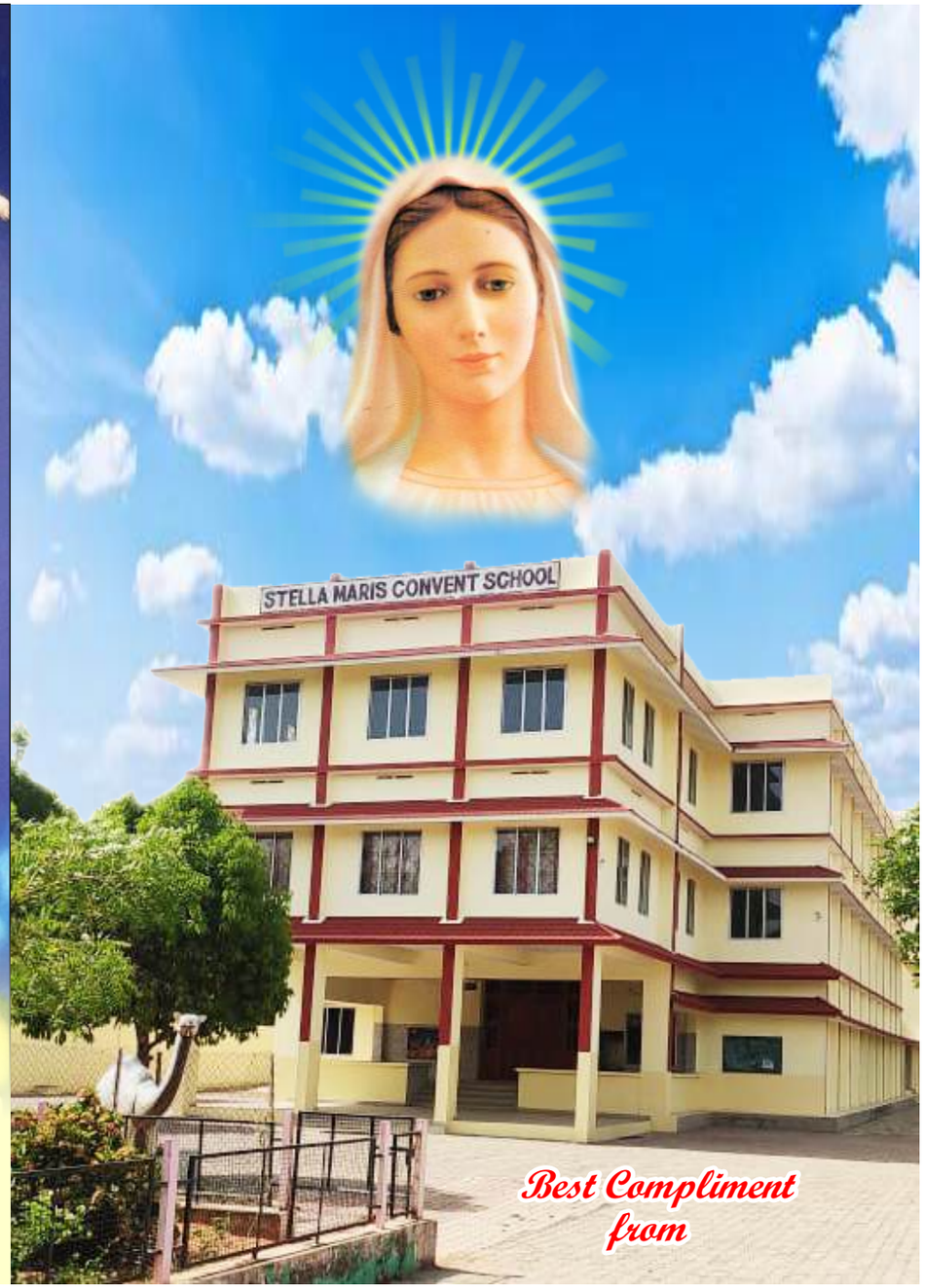

Best Compliment from

परंपरा के तुरंत बाद, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जहन रोमियों के अधिनियमों में शामिल हो गए, जो १ कुरिन्थियों समूह की तरह व्यवहार कर रहे थे क्योंकि दूसरा कुरिन्थियों समूह हमेशा गलतियों के साथ लहगरहेड्स में थे'. उस समय भी, उन्होंने महसूस किया कि' इफिसियों और फिलिप्पियों कुलुस्सियों के निकट थे, और प्रथम थिस्सलुनीकियों की यात्रा के लिए एक सुझाव दिया गया था, और यह कि उनकी दूसरी थिस्सलुनीकियों यात्रा पर, उन्हें पहले तीमुथियुस के पहला और दूसरा भाई देखें जो अपने छोटे भाई फिलेमोन को 'हिब्रू में पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए तीतुस के घर गए थे। यह सुनकर, जेम्स ने पीटर से दो बार यह समझाने के लिए कहा कि कैसे तीन यूहन्ना ने यहूदा को इस यात्रा के रहस्योद्घाटन का खुलासा किया है।

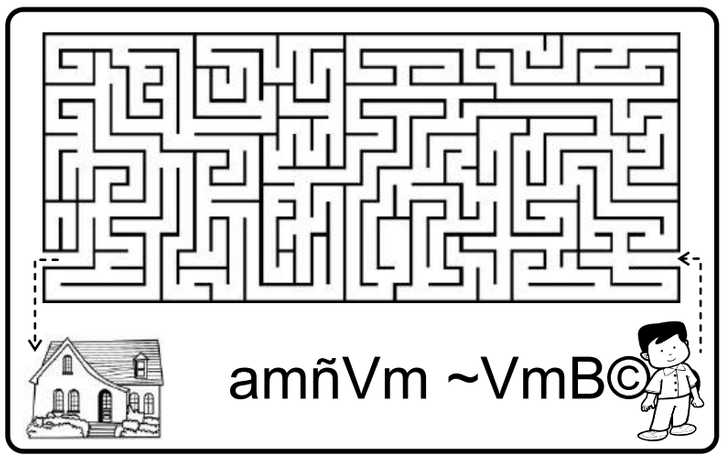

THY KINGDOM COME (Mt. 6:10)
DIOCESE OF CHANDA (CHANDRAPUR)
Phone : (07172) 240537, 241068 (P.)

Bishop's Home
Ballarpur P.O. - 442 701
Chandrapur Dist., M.S.
India.
E-mail : bishopchanda@gmail.com

Ephrem Nariculam
Bishop, Diocese of Chanda
E-mail : bishopephremnariculam@gmail.com
Mob. No. 9130702331 (Idea)
9423261891 (BSNL)

अपने प्रभू येशू के नाम से पूरे राज्य को शुभकामनाये।

"ईसा ने एक बालक को बुलाया और उसे उनके बीच खडा कर कहा, मैं तुम लोगों से यह कहता हूँ - यदि तुम फिर छोटे बालकों-जैसे नहीं बन जाओगे, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नही करोगे" (Mal. १८:२-३)

प्रभु येशु मसीह बच्चों से प्यार करता था और उनकी अच्छाई की सराहना करता था। प्रत्येक बच्चा दूसरों से ऐसी सराहना की आकांक्षा रखता है जैसे येशु मसीह ने ऊपर दिए सुसमाचार वाक्य में की थी। हमारे धर्मप्रांत में होली चाइल्डहुड एसोसिएशन का यह प्रकाशन बच्चों को येशु के करीब लाने का एक प्रयास है। इसे पढ़ें और येशु के प्रेम और करुणा को बढ़ाएं। येशु मसीह आप सभी को आशीष दे।

Bp. Ephrem Nariculam

खुद पर भरोसा तो शक्ति

दूसरों पर भरोसा तो कमजोरी

मैं हूँ अनय। यह मेरे स्कूल के दिनों की बातें है, जब मैं नौवी कक्षा में पढ़ रहा था। मैं शरारती था और मेरा पढ़ाई मे जी बिल्कुल न लगता था। मुझे कक्षा में चल रही पढ़ाई में ज्यादा रूची नही थी। मुझे तो किताबों से ज्यादा खेल-कूद पसंद था। मेरे माता-पिता को मेरी ऐसी स्थिति पर तरस आता था परंतु मुझे उसकी फिक्र न थी।

खेल-कूद में दिन ऐसे की कट गए और वार्षिक परीक्षा निकट आ गई और मुझे पता भी न चला कि पढ़ाई पूरी नही होने के कारण मेरे दोस्तों ने मुझे नकल करवाने का सुझाव दिया। हमने परीक्षा मं नकल करने की पूरी योजना तैयार कर ली थी। पहिली परीक्षा 'विज्ञान' की थी, जिसमें हमने यह तय किया की शिव और तुषार 'गुरूत्वाकर्षण' पाठ में मेरी नकल करवाऐंगे। सर्वेश और लक्ष्य 'कार्य और ऊर्जा' पाठ में मेरी मदत करेंगे और अभ्युदय मेरी मदत बाकी के पाठों में कर देगा क्योंकि वह कक्षा का अव्वल और प्रथम अंको वाला विद्यार्थी था।

वह दिन आया, जब हमारी परीक्षा थी। परीक्षा के दिन अभ्युदयः मेरे समीप बैठा था। परंतु कक्षा में सख्त और कठोर अध्यापिका के आ जाने से मेरे मित्रों ने मुझे

बहुत खूब !!!

कितना सुंदर लिखा है

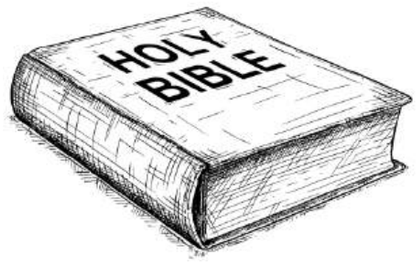

मैं एक्सोडस सड़क से होते हुए जेनेसिस होटल गया। रास्ते में, मैं ने लैव्यव्यवस्था को व्यवस्थाविवरण में लोगों की संख्या रिकहर्ड करते देखा, जबकि यहोशू सुंदर द्वार पर न्यायाधीशों की प्रतीक्षा कर रहा था ताकि रूथ को जोर से "शमूएल, शमूएल पुकारते हुए देखा जा सके। . एक समय पर, इतिहास १ और २ के पहले और दूसरे राजा अपने भाई अय्यूब के दुर्भाग्य के लिए एज्रा, नहेमायाह और एस्तेर से मिलने आ रहे थे। उन्होंने भजन गाना शुरू किया ' और बच्चों को 'सभोपदेशक और सुलैमान के गीत के बारे में नीतिवचन पढ़ाना। यह उस अवधि के साथ मेल खाता है जब यशायाह यिर्मयाह विलाप में अपने दोस्तों यहेजकेल और दानिय्येल के साथ जुड़ा हुआ था। उस समय तक, आमोस और ओबद्याह आसपास नहीं थे। तीन दिन बाद, होशे, योएल और योना एक ही जहाज में मीका और नहूम के साथ यरूशलेम गए। हबक्कूक फिर सपन्याह गए।

जिसने उसे जकर्याह के एक दोस्त हाग्गै से मिलवाया, जिसका चचेरा भाई मलाकी है।

पवित्र हृदय के भक्तों को ईसा देने वाला अनुग्रह :

१. मैं उन्हें उनके जीवन के लिए आवश्यक अनुग्रह दूँगा।

२. उनके परिवारों में शांति बहाल करेंगे।

३. मैं उनके सब संकटों में उन्हें शान्ति दूँगा।

४. मैं उनके जीवन में और उनकी मृत्यु में उनका पक्का आश्रय होगा।

५. उनके सभी प्रयासों में प्रचुर आशीर्वाद की बारिश करूँगा।

६. मैरियन पथराम पापी मेरे हृदय में अथाह हैं। दया का सागर मिलेगा।

७. उत्साही आत्माएँ तेजी से महान पूर्णता की ओर बढ़ेंगी।

८. मैं पूजा करने वाले हर स्थान और घर को कटिरूहृदय की छवि के साथ आशीर्वाद दूँगा।

९. सुस्त आत्मा जोशीली हो जाती है।

१०. इस भक्ति का प्रचार करने वालों के नाम मेरे दिल पर लिखे जाएंगे और हटाए नहीं जाएंगे।

ज्यादा कुछ नही दिखाया और अभ्युदयः ने मुझे समय पर धोखा दे दिया। इस अप्रत्याक्षित घटना के कारण मुझे बहुत बड़ा सदमा लगा और बाकी की परिक्षाये भी अच्छी नही गई। मेरी लोगों से दिलचस्पी खत्म हो गई और मैंने अपने दोंस्तो से बात करना छोड़ दिया।

परीक्षाफल के दिन जब मेरी मार्कशीट मेरे पिता के हाथों लगी तो वह आग बबुले हो गए और मेरी माता को बहुत बडा धक्का लगा। जैसे-तैसे तो मैं नौंवी पास होकर दसंवी कक्षा में पहूँच गया परंतु यह धोखा मुझे सदैव स्मरण रहा। मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ और तभी से मैंने नए जोश के साथ पढ़ाई शुरू कर दी।

मैंने कठिन परिश्रम किया और मेरे अंक दिन-पर-दिन बढ़ते चलें गए। एक समय ऐसा आया कि मैंने दसंवी बोर्ड मे अत्यंत अच्छे अंक लाए।

* * *

- जिज्ञासा

इस घटना से यह शिक्षा मिली जब मैंने अपने दोस्तों पर अंधविश्वास और भरोसा रखा तो मैं कमजोर पड गया और जब मैंने खुद से पढ़ाई शुरू करके खुद पर भरोसा किया तो वह मेरी ताकत बन गई।

जीवन की असफलता

श्यामनगर में एक साधु रहता था। वह सुबह-सुबह जॉगिंग के लिए जाते थे। वह व्यायाम करना बहुत पसंद करता था।

एक सुबह जॉगिंग के लिए जाते समय उसने देखा कि एक व्यक्ति पुल पर खडा है। वह आदमी उदास दिख रहा था। उसे देखकर साधू उस आदमी के पास गया और पुछा ''भाई तुम यहाँ सुबह-सुबह क्या कर रहे हो? क्षमा करे, लेकिन मैने आपको यहाँ कभी नही देखा''।

''मैने सब कुछ खो दिया। मेरे पास पैसा नही है। अब मैं जीवन भर गरीब रहूँगा।'' यह कहकर वह उदास आदमी रोने लगा। अब साधू समझ चुका था कि उस आदमी की परेशानी क्या थी। उसने पूछा ''तुम्हे यकीन है कि तुमने सब कुछ खो दिया है? मुझे लगता है तुम झूठ बोल रहे हो।''

उदास आदमी ने साधु से कहा ''नहीं, मै झूठ नही बोल रहा हूँ। मेरे पास एक भी रूपया भी बचा नही है।''

''ठीक है फिर एक काम करो।'' साधू ने कहा - ''तुम्हारी दोनो आँखो मे से मुझे अपनी एक आँख दे दो और मै तुम्हे ७० हजार दूंगा।'' उस आदमी ने जवाब दिया, ''नही, मैं अपनी आँखे तुम्हे नहीं दे सकता।''

७. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो, वह बलि तुम्हें विपत्ति एवं अत्याचार से बचाएगा।

८. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो, वह बलि में देवदूत तुम्हारे साथ रहेंगें।

९. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो, वह बलि द्वारा तुम्हारे आर्थिक और भौतिक स्थिति मे बढ़ोत्तरी होगी।

१०. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो, वह बलि तुम्हारे मृत्यु के बाद जो भी बलि तुम्हारे लिए चढाते है। उससे भी कई गुणा फ़लदायक होगी।

* * *

पवित्र बलिदान का महत्व

१. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो,
वह बलि तुम्हे मृत्यू के समय सांत्वना देगा।

२. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो,
वह बलि तुम्हें अंतिम दिन में दंडाज्ञा से बचाएगा।

३. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो,
वह बलि तुम्हारे पाप क्षमा का कारण बन जाएगा।

४. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो,
वह बलि द्वारा शैतान की शक्ती तुमसे दूर हो जाएगी।

५. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो,
वह बलि शुध्दीकरण के आत्माओं का आनंद का कारण बन जाता है।

६. जिस पवित्र बलि में तुम भक्ति भाव से भाग लेते हो,
वह बलि तुम्हारा शुध्दीकरण के स्थान के समय को कम करता है।

तो साधु ने कहा ''ठीक है तो बस मुझे अपना एक हाथ दे दो और मै तुम्हें ९० हजार दूँगा।'' उस आदमी ने फिर से साधू के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

साधू ने फिरसे कहा ''भाई फिर मुझे अपना पैर दे दो। मै तुम्हे १ लाख दूँगा।'' उस उदास आदमी ने फिर इनकार कर दिया।

तब साधु बोला ''फिर आप कैसे कह सकते हैं कि आपके पास कुछ भी नही है? आपकी आँखे, कान, हाथ, पैर लाखों की कीमत के है? जब इनका मूल्य लाखों में है, तो सोचो तुम्हारे शरीर का मूल्य कितना होगा।'' अब वह उदास आदमी चुप था और साधू की बाते सोच रहा था।

साधु ने कहा ''देखो, तुम्हारे पास कितना भी पैसा हो, जिनके पास अच्छा स्वस्थ शरीर उससे बढकर धनि और कौन हो सकता है।'' उस आदमी ने साधू को गले लगाया और फिर से कडी मेहनत करने लगा। साधु ने उस आदमी के जीवन का मार्ग हमेशा के लिए बदल दिया था।

* * *

– गार्गी

पुरानी गलतियों को भूल जाओ, असफलताओ को भूल जाओ, अभी जो करने जा रहे हो उसके अलावा हर एक चीज को भूल जाओ और उसे करो। कहते है बुरा वक्त सबका आता है। पर कोई निखर जाता है तो कोई बिखर जाता है।

कार्लो एक्यूटिस

आपको जानकर हैरानी होगी की, एक आधुनिक किशोर संत है। संत कार्लो एक्युटिस। सभी किशोरों की तरह वह एक तकनीकि जानकार थे। वास्तव में उसके कुछ दोस्तो ने सोचा कि वह एक कंप्यूटर कुशल थे। लेकिन जो बात इस युवा को अलग करता है, वह यह है कि उसने अपनी तकनिकी विशेषता को इस महान आध्यात्मिक खजाने से जोड़ा। जिसके बारे में हम सिर्फ कल्पना कर सकते है। युखिस्ट

'कार्लो एक्यूटिस' एक इमलावी ईसाई थे। जिनका जन्म ३ मई १९९१ में लंडन में हुआ। उनके जन्म के कुछ महीने बाद वे वापस इटली चले गए और लियोन में रहने लगे। वही पले बढ़े। उन्होंने अपनी हाईस्कूल की पढ़ाई जेसुइट के इंस्टीटयूट लियोन XIII से पूरी की। वह एक हंसमुख छात्र, और एक दैनिक संचालक थे। जब उनसे कारण पूछा, तो उनका उत्तर

६. आप दूसरों की मदद करने के लिए प्रभु और पवित्र माँ मरियम के समान संकल्प और त्याग करना।

७. हर दिन पवित्र शास्त्रों का एक अंश पढ़े।

८. लगातार अपने रक्षक देवदूत से मदद माँगे। जो आपका सबसे अच्छा दोस्त बन सके।

९. आप भी संत बन सकते हैं।

जहाँ जाइये प्यार फैलाईए जो भी आपके पास आये वह और खुश होकर लौटे...

– मदर टेरेसा

संत बनने की टिप

आदरणीय कार्लो एक्यूटिस कथाटेकिसम ने बच्चों की मदत करने के लिए, अपने प्रसिध्द ''संत बनने के लिए टिप'' तैयार की।

१. आप इसे संत बनने के लिए अपने पूरे दिल से चाहो। और यदि आप नही चाहते है तो भी आपके भगवान से आग्रह करना होगा।

२. पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लेना और परम प्रसाद ग्रहन करने की कोशिश करना।

३. यदि आप परम प्रसाद की पेटी के सामने परम प्रसाद की आराधना में कुछ क्षण बिताऐगें जिसमें वास्तव में मौजूद है, तो आप देखेगें की आपकी पवित्रता बढ़ती जाती है।

४. हर रोज पवित्र माला रोजरी कहना याद रखे।

५. आप हर हप्ते अपने पापों की क्षमा के लिए प्रायश्चित संस्कार स्वीकार करना।

था, ''जितना अधिक युखिस्ट हम प्राप्त करेंगे उतना ही हम येशु के समान बनेगें। ताकि हम इस पृथ्वी पर स्वर्ग का स्वाद चखें।''

धन्य कुँवारी मरियम के प्रति उनकी बहुत भक्ति थी और उन्हें रोजरी माला की प्रार्थना करना बहुत पसंद था। वह नियमित रूप से सामूहिक प्रार्थना के पहले या बाद में तम्बू के सामने प्रार्थना में समय व्यतीत करते थे। हमेशा यीशु के करीब रहना यही मेरी जीवन योजना है, ऐसी टिप्पणी की थी। हर हप्ते एक बार वो अपना पाप स्वीकार किया करते थे।

उसके दोस्तो का कहना है कि वह स्कूल में शारीरिक रूप से असक्षम छात्रों की रक्षा करते थे। जब दूसरे छात्राओं की धमकियों से उन्हे परेशान करते थे; तब वह उनके स्कूली साथियों के साथ सहानुभुति रखते थे। जिनके माता-पिता तलाकशुदा थे वे उनके संघर्षो को समझते हुए उन्हे सांत्वना देने और प्रोत्सहित करने के लिए अपने घर पर आमंत्रित करते थे। उन्हें यात्रा करना पसंद था लेकिन उन्हें संत

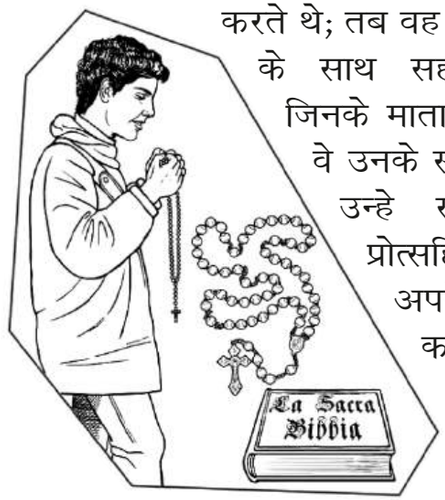

फ्रांसिस की जगह असीसी जाने का भी शौक था। जिसकी उन्होने गहरी प्रशंसा की। कार्लो ने अपने कंप्यूटर कौशल का इस्तेमाल किया और एक वेबसाइट विकसित की। जिसमें युखिस्त के चमत्कारों को सूचीबध्द किया था। यह वह वेबसाइट थी जिसे उन्होंने डिजाईन किया था। जिसने आंतराष्ट्रीय यात्रा प्रदर्शनी का मार्ग प्रशस्त किया।

पंद्रह साल की उम्र में उन्हे ल्युकेमिया का पता चला था। उन्होने पोप और चर्च के सामने अपने दर्द और पीड़ा की पेशकश की। उन्होने अपने माता-पिता से उन्हें दुनिया के सभी ज्ञात युखिस्त चमत्कारों के स्थलों पर ले जाने के लिए कहा; लेकिन वे ऐसा नही कर सके क्योंकि उनके बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण वह मुमकिन नही था। उसका इलाज करने वाले डॉक्टरने उनसे पूछा कि, क्या उसे बहुत दर्द होता है? इस पर उसने जवाब दिया कि, कुछ ऐसे भी लोग हैं जो मुझसे ज्यादा पीडित हैं। मै पंद्रह वर्ष की इस जीवन यात्रा में मरने के लिए खुश हूँ क्योकि मैंने अपना जीवन एक मिनिट भी बर्बाद नही किया। हमारा लक्ष्य अनंत होना चाहिए। अनंत हमारी मातृभूमि है जिसकी हम, हमेशा स्वर्ग में अपेक्षा करते है। उस युखिस्ट का क्या जो जीवन का केंद्र प्रतीत होता है? उनका उत्तरः वह स्वर्ग के लिए मेरा राजमार्ग है।

कार्लो एक्यूटिस की मृत्यू माँन्जा में १२ अक्टूबर २००६ में हुई। और जैसा उन्होने चाहा, वैसे उन्हे असीसी में दफनाया गया। उनकी मृत्यू के तुरंत बाद, जो लोग उन्हे जानते थे, वे उसे धन्य घोषित करने के लिए पुकारने लगे। उसका कारण २०१३ में शुरू हुआ और उन्हें भगवान का सेवक घोषित किया गया। पाँच साल बाद २०१८ में पोप फ्रांसिस ने उन्हें आदरणिय घोषित किया। जनवरी २०१९ में आदरणीय कार्लो एक्यूटिस के नश्वर अवशेषों को निकाला गया था। कुछ लोगों ने दावा किया कि उनका शरीर भ्रष्ट नही है लेकिन इसकी अधिकारक पुष्टि नही हुई है।

केवल अविनाशीता ही व्यक्ति को धन्य बनाने के लिए पर्याप्त नही है। एक चमत्कार की जरूरत रहती है। उनके अवशेषों को अप्रेल २०२१ में असीसी में त्याग के तीर्थ में फिर से दफनाया गया है।

उस पवित्र किशोर के प्रति समर्पण स्पेन में उभरा और स्पेन में एक गंभीर रूप से बीमार युवक की चिकित्सा जिसने उससे प्रार्थना की। हाल ही में 'मेडिकल काउंसिल ऑफ दी कॉन्ग्रिगेशन फॉर सेंट्रस कॉज' द्वारा ''चमत्कारी'' की पुष्टि की गई है। वो कार्लो एक्यूटिस को धन्य घोषित करने के लिए अगला कदम था। फिर उनकी हिमायत के लिए एक और चमत्कार ने उनके विमुद्रीकरण का रास्ता साफ कर दिया।

- Anida Samuvel